Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

Model: MyKundli

Order No: 135453 **Date: 14/06/2014**

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	31-01/01/2014
दिन	मंगलवार-बुधवार
जन्म समय	00:00:00 घंटे
इष्ट	41:50:25 घटी
स्थान	Dehradun
राज्य	Uttarakhand
देश	India
अक्षांश	30:18:59 उत्तर
रेखांश	78:01:55 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:17:52 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	23:42:07 घंटे
वेलान्तर	-00:02:59 घंटे
साम्पातिक काल	06:23:30 घंटे
सूर्योदय	07:15:50 घंटे
सूर्यास्त	17:26:12 घंटे
दिनमान	10:10:22 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	16:11:25 धनु
लग्न के अंश	11:03:13 कन्या

दादा का नाम	
पिता का नाम	
माता का नाम	
जाति	
गोत्र	
चैत्रादी संवत शक	2070 / 1935
माह	पौष
पक्ष	कृष्ण
सूर्योदय कालीन तिथि	14
तिथि समाप्ति काल	20:30:45
जन्म तिथि	15
सूर्योदय कालीन नक्षत्र	ज्येष्ठा
नक्षत्र समाप्ति काल	14:06:18 घंटे
जन्म नक्षत्र	मूल
सूर्योदय कालीन योग	गण्ड
योग समाप्ति काल	10:28:23 घंटे
जन्म योग	वृद्धि
सूर्योदय कालीन करण	विष्टि
करण समाप्ति काल	10:17:55 घंटे
जन्म करण	चतुष्पाद
भयात	24:44:15
भभोग	52:35:43
भोग्य दशा काल	केतु 3 वर्ष 8 मा 19 दि

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	कन्या - बुध
राशि-स्वामी	**धनु - गुरु**
नक्षत्र-चरण	**मूल - 2**
नक्षत्र स्वामी	केतु
योग	वृद्धि
करण	चतुष्पाद
गण	राक्षस
योनि	श्वान
नाड़ी	आद्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मृग
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	यो-योगेश
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मक

घात चक्र

मास	श्रावण
तिथि	3-8-13
दिन	शुक्रवार
नक्षत्र	भरणी
योग	वज्र
करण	तैतिल
प्रहर	1
वर्ग	सिंह
लग्न	धनु
सूर्य	तुला
चन्द्र	मीन
मंगल	वृश्चिक
बुध	सिंह
गुरु	धनु
शुक्र	कुम्भ
शनि	कन्या
राहु	कुम्भ

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

sample

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	11:03:13	000:00:00	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	चंद्र	---
सूर्य			धनु	16:11:25	01:01:11	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	सूर्य	मित्र राशि
चंद्र			धनु	06:15:00	15:12:38	मूल	2	19	गुरु	केतु	राहु	सम राशि
मंग			कन्या	17:29:12	00:26:42	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	शनि	शत्रु राशि
बुध		अ	धनु	17:39:28	01:36:45	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	मंग	सम राशि
गुरु	व		मिथु	22:05:33	00:08:03	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	शनि	शत्रु राशि
शुक्र	व		मक	02:56:05	00:23:48	उत्तराषाढ़ा	2	21	शनि	सूर्य	गुरु	मित्र राशि
शनि			तुला	26:16:53	00:05:27	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	केतु	उच्च राशि
राहु	व		तुला	11:31:13	00:09:02	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	मित्र राशि
केतु	व		मेष	11:31:13	00:09:02	अश्विनी	4	1	मंग	केतु	बुध	मित्र राशि
हर्ष			मीन	14:37:07	00:00:43	उ०भाद्रपद	4	26	गुरु	शनि	राहु	---
नेप			कुंभ	09:09:55	00:01:32	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	---
प्लू			धनु	17:11:35	00:02:07	पूर्वाषाढ़ा	2	20	गुरु	शुक्र	चंद्र	---
दशम भाव			मिथु	11:20:23	--	आर्द्रा	--	6	बुध	राहु	शनि	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:03:20

लग्न-चलित

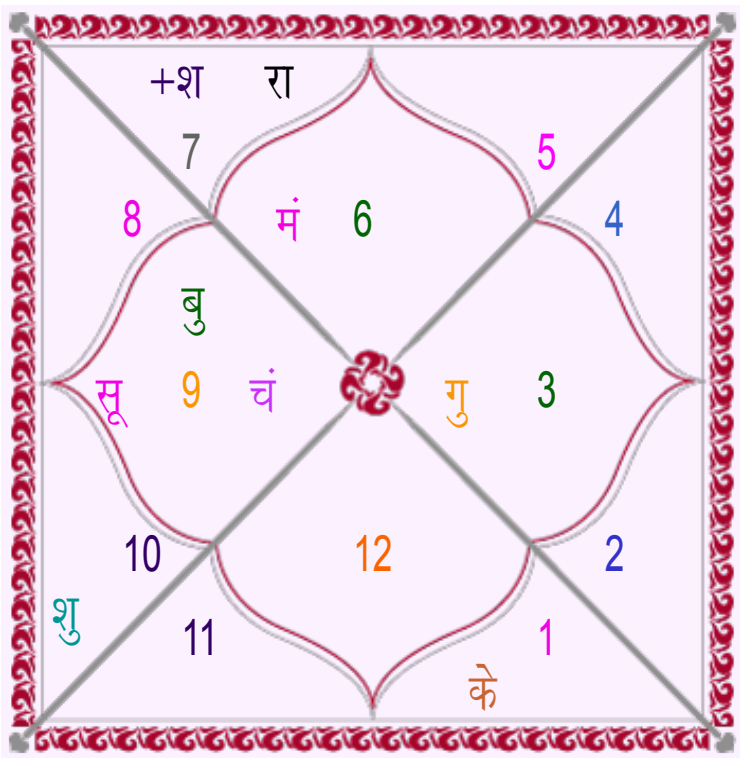

चन्द्र कुंडली

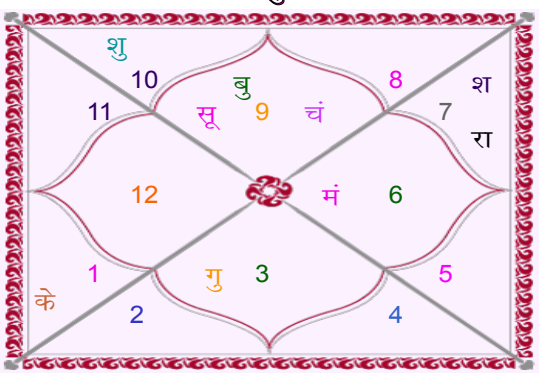

नवमांश कुंडली

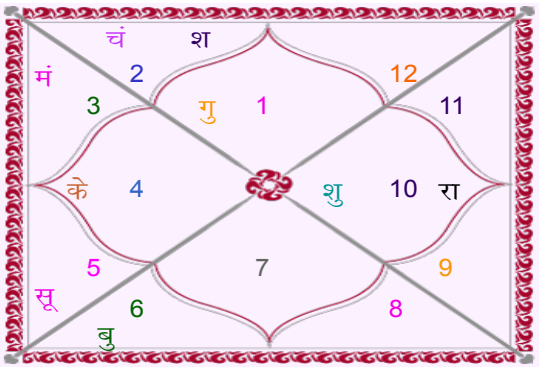

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	सिंह	26:06:05	कन्या	11:03:13
2	कन्या	26:06:05	तुला	11:08:57
3	तुला	26:11:48	वृश्चिक	11:14:40
4	वृश्चिक	26:17:31	धनु	11:20:23
5	धनु	26:17:31	मकर	11:14:40
6	मकर	26:11:48	कुम्भ	11:08:57
7	कुम्भ	26:06:05	मीन	11:03:13
8	मीन	26:06:05	मेष	11:08:57
9	मेष	26:11:48	वृष	11:14:40
10	वृष	26:17:31	मिथुन	11:20:23
11	मिथुन	26:17:31	कर्क	11:14:40
12	कर्क	26:11:48	सिंह	11:08:57

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	11:03:13
2	तुला	09:03:08
3	वृश्चिक	09:32:35
4	धनु	11:20:23
5	मकर	13:10:24
6	कुम्भ	13:33:52
7	मीन	11:03:13
8	मेष	09:03:08
9	वृष	09:32:35
10	मिथुन	11:20:23
11	कर्क	13:10:24
12	सिंह	13:33:52

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

चलित कुंडली

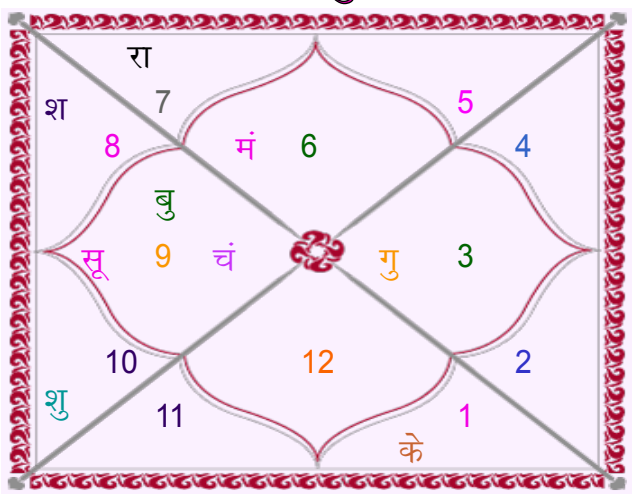

भाव कुंडली

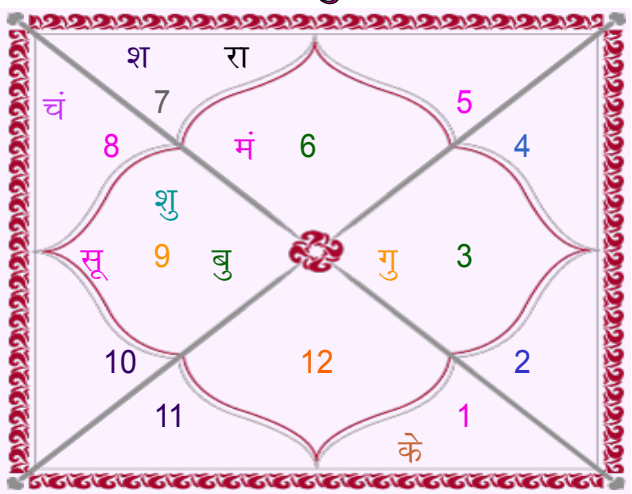

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 3 वर्ष 8 मास 19 दिन

केतु		शुक्र		सूर्य		चन्द्र		मंगल	
01/01/2014		20/09/2017		20/09/2037		20/09/2043		20/09/2053	
20/09/2017		20/09/2037		20/09/2043		20/09/2053		20/09/2060	
केतु	00/00/0000	शुक्र	19/01/2021	सूर्य	07/01/2038	चंद्र	21/07/2044	मंग	16/02/2054
शुक्र	00/00/0000	सूर्य	20/01/2022	चंद्र	09/07/2038	मंग	19/02/2045	राहु	06/03/2055
सूर्य	00/00/0000	चंद्र	20/09/2023	मंग	14/11/2038	राहु	21/08/2046	गुरु	10/02/2056
चंद्र	00/00/0000	मंग	19/11/2024	राहु	09/10/2039	गुरु	21/12/2047	शनि	21/03/2057
मंग	01/01/2014	राहु	20/11/2027	गुरु	27/07/2040	शनि	21/07/2049	बुध	18/03/2058
राहु	08/09/2014	गुरु	21/07/2030	शनि	09/07/2041	बुध	20/12/2050	केतु	15/08/2058
गुरु	15/08/2015	शनि	20/09/2033	बुध	15/05/2042	केतु	21/07/2051	शुक्र	15/10/2059
शनि	23/09/2016	बुध	21/07/2036	केतु	20/09/2042	शुक्र	21/03/2053	सूर्य	19/02/2060
बुध	20/09/2017	केतु	20/09/2037	शुक्र	20/09/2043	सूर्य	20/09/2053	चंद्र	20/09/2060

राहु		गुरु		शनि		बुध		केतु	
20/09/2060		20/09/2078		20/09/2094		21/09/2113		21/09/2130	
20/09/2078		20/09/2094		21/09/2113		21/09/2130		00/00/0000	
राहु	03/06/2063	गुरु	07/11/2080	शनि	23/09/2097	बुध	17/02/2116	केतु	17/02/2131
गुरु	26/10/2065	शनि	22/05/2083	बुध	03/06/2100	केतु	14/02/2117	शुक्र	18/04/2132
शनि	01/09/2068	बुध	26/08/2085	केतु	13/07/2101	शुक्र	16/12/2119	सूर्य	24/08/2132
बुध	22/03/2071	केतु	02/08/2086	शुक्र	11/09/2104	सूर्य	21/10/2120	चंद्र	25/03/2133
केतु	08/04/2072	शुक्र	02/04/2089	सूर्य	24/08/2105	चंद्र	22/03/2122	मंग	21/08/2133
शुक्र	09/04/2075	सूर्य	20/01/2090	चंद्र	26/03/2107	मंग	20/03/2123	राहु	02/01/2134
सूर्य	03/03/2076	चंद्र	22/05/2091	मंग	04/05/2108	राहु	06/10/2125	गुरु	00/00/0000
चंद्र	02/09/2077	मंग	26/04/2092	राहु	10/03/2111	गुरु	12/01/2128	शनि	00/00/0000
मंग	20/09/2078	राहु	20/09/2094	गुरु	21/09/2113	शनि	21/09/2130	बुध	00/00/0000

– उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 3 वर्ष 8 मा 15 दि होता है।
– उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

sample

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

विंशोत्तरी दशा-प्रत्यन्तर

केतु-केतु		केतु-राहु		केतु-गुरु		केतु-शनि		केतु-बुध	
01/01/2014		01/01/2014		08/09/2014		15/08/2015		23/09/2016	
01/01/2014		08/09/2014		15/08/2015		23/09/2016		20/09/2017	
केतु	00/00/0000	राहु	00/00/0000	गुरु	23/10/2014	शनि	18/10/2015	बुध	13/11/2016
शुक्र	00/00/0000	गुरु	01/01/2014	शनि	16/12/2014	बुध	14/12/2015	केतु	04/12/2016
सूर्य	00/00/0000	शनि	06/02/2014	बुध	03/02/2015	केतु	07/01/2016	शुक्र	02/02/2017
चंद्र	00/00/0000	बुध	01/04/2014	केतु	22/02/2015	शुक्र	14/03/2016	सूर्य	20/02/2017
मंग	00/00/0000	केतु	23/04/2014	शुक्र	20/04/2015	सूर्य	04/04/2016	चंद्र	23/03/2017
राहु	00/00/0000	शुक्र	26/06/2014	सूर्य	07/05/2015	चंद्र	07/05/2016	मंग	13/04/2017
गुरु	00/00/0000	सूर्य	16/07/2014	चंद्र	05/06/2015	मंग	31/05/2016	राहु	06/06/2017
शनि	00/00/0000	चंद्र	16/08/2014	मंग	25/06/2015	राहु	31/07/2016	गुरु	24/07/2017
बुध	01/01/2014	मंग	08/09/2014	राहु	15/08/2015	गुरु	23/09/2016	शनि	20/09/2017

शुक्र-शुक्र		शुक्र-सूर्य		शुक्र-चंद्र		शुक्र-मंग		शुक्र-राहु	
20/09/2017		19/01/2021		20/01/2022		20/09/2023		19/11/2024	
19/01/2021		20/01/2022		20/09/2023		19/11/2024		20/11/2027	
शुक्र	11/04/2018	सूर्य	07/02/2021	चंद्र	11/03/2022	मंग	15/10/2023	राहु	03/05/2025
सूर्य	11/06/2018	चंद्र	09/03/2021	मंग	16/04/2022	राहु	18/12/2023	गुरु	26/09/2025
चंद्र	20/09/2018	मंग	30/03/2021	राहु	16/07/2022	गुरु	13/02/2024	शनि	18/03/2026
मंग	30/11/2018	राहु	24/05/2021	गुरु	05/10/2022	शनि	20/04/2024	बुध	21/08/2026
राहु	01/06/2019	गुरु	12/07/2021	शनि	10/01/2023	बुध	20/06/2024	केतु	24/10/2026
गुरु	10/11/2019	शनि	08/09/2021	बुध	06/04/2023	केतु	15/07/2024	शुक्र	24/04/2027
शनि	21/05/2020	बुध	29/10/2021	केतु	11/05/2023	शुक्र	24/09/2024	सूर्य	18/06/2027
बुध	09/11/2020	केतु	20/11/2021	शुक्र	21/08/2023	सूर्य	15/10/2024	चंद्र	17/09/2027
केतु	19/01/2021	शुक्र	20/01/2022	सूर्य	20/09/2023	चंद्र	19/11/2024	मंग	20/11/2027

शुक्र-गुरु		शुक्र-शनि		शुक्र-बुध		शुक्र-केतु		सूर्य-सूर्य	
20/11/2027		21/07/2030		20/09/2033		21/07/2036		20/09/2037	
21/07/2030		20/09/2033		21/07/2036		20/09/2037		07/01/2038	
गुरु	29/03/2028	शनि	20/01/2031	बुध	13/02/2034	केतु	15/08/2036	सूर्य	25/09/2037
शनि	30/08/2028	बुध	03/07/2031	केतु	15/04/2034	शुक्र	25/10/2036	चंद्र	04/10/2037
बुध	15/01/2029	केतु	09/09/2031	शुक्र	04/10/2034	सूर्य	15/11/2036	मंग	11/10/2037
केतु	13/03/2029	शुक्र	19/03/2032	सूर्य	25/11/2034	चंद्र	20/12/2036	राहु	27/10/2037
शुक्र	22/08/2029	सूर्य	16/05/2032	चंद्र	19/02/2035	मंग	14/01/2037	गुरु	11/11/2037
सूर्य	10/10/2029	चंद्र	21/08/2032	मंग	21/04/2035	राहु	19/03/2037	शनि	28/11/2037
चंद्र	30/12/2029	मंग	27/10/2032	राहु	23/09/2035	गुरु	15/05/2037	बुध	14/12/2037
मंग	25/02/2030	राहु	19/04/2033	गुरु	08/02/2036	शनि	21/07/2037	केतु	20/12/2037
राहु	21/07/2030	गुरु	20/09/2033	शनि	21/07/2036	बुध	20/09/2037	शुक्र	07/01/2038

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती ह। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	9
मित्र अंक	1, 4, 8, 9
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, ओपल
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

sample

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सौंपकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है। सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन-तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

शुभ रत्न

जीवन रत्नः	पन्ना	सुख,व्यावसायिक उन्नति,स्वास्थ्य
भाग्य रत्नः	हीरा	सन्तति सुख,भाग्योदय,धन
कारक रत्नः	नीलम	धन,सन्तति सुख,शत्रु व रोग मुक्ति

दशा	रत्न	क्षमता	मंत्र-जप / व्रत / दान / लाभ
केतु	पन्ना	70%	ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः (17000)
01/01/2014	हीरा	59%	मंगलवार,तिल, सप्तधान्य, नारियल, शस्त्र, तेल
20/09/2017	नीलम	50%	दुर्घटना से बचाव, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
शुक्र	पन्ना	82%	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (16000)
20/09/2017	हीरा	77%	शुक्रवार,चावल, मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन, दूध
20/09/2037	नीलम	52%	सन्तति सुख, भाग्योदय, धन
सूर्य	पन्ना	78%	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (7000)
20/09/2037	हीरा	57%	रविवार,गेहुँ, मूंगा, केसर, रक्तचन्दन, घी
20/09/2043	नीलम	47%	सुख, कम खर्च, धन
चन्द्र	पन्ना	82%	ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (11000)
20/09/2043	हीरा	60%	सोमवार,चावल, शंख, कपूर, श्वेतचन्दन, दही
20/09/2053	नीलम	50%	सुख, धनार्जन, धन
मंगल	पन्ना	66%	ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (10000)
20/09/2053	हीरा	55%	मंगलवार,मल्का, केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन, घी
20/09/2060	नीलम	54%	स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव, पराक्रम
राहु	पन्ना	71%	ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः (18000)
20/09/2060	नीलम	60%	शनिवार,तिल, सरसों, खड़ग, कम्बल, तेल
20/09/2078	हीरा	59%	धन, दुर्घटना से बचाव, पराक्रम
गुरु	पन्ना	71%	ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः वृहस्पतये नमः (19000)
20/09/2078	हीरा	60%	गुरुवार,दाल चना, हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प, तेल
20/09/2094	नीलम	49%	व्यावसायिक उन्नति, सुख, पराक्रम

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है । शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-19/01/2017
साढेसाती द्वितीय ढैया	19/01/2017-18/01/2020
साढेसाती तृतीय ढैया	18/01/2020-21/07/2022
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/03/2025-26/10/2027
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/07/2034-20/08/2036

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	02/12/2043-29/11/2046
साढेसाती द्वितीय ढैया	29/11/2046-20/07/2049
साढेसाती तृतीय ढैया	20/07/2049-17/02/2052
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/09/2054-01/04/2057
अष्टम स्थानस्थ ढैया	15/02/2064-03/10/2065

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	20/04/2073-04/08/2076
साढेसाती द्वितीय ढैया	04/08/2076-03/01/2079
साढेसाती तृतीय ढैया	03/01/2079-18/08/2081
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	09/03/2084-11/05/2086
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/06/2093-07/08/2095

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	पराक्रम हानि
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	सुख
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	सन्तति सुख
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	दम्पति
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	अल्प बचत

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपमुा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उमुद की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

फ्यूचर पॉइंट प्रा. लि.
मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-*-

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके । इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।
द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं–

1. अनंत
2. कुलिक
3. वासुकि
4 शङ्खपाल
5. पद्म
6. महापद्म
7. तक्षक
8. कर्कोटक
9. शङ्खचूड
10. घातक
11. विषधर एवं
12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु–केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु–केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के ल क्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब–जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु–केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्णरूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

फ्यूचर पॉइंट प्रा. लि.
मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

धनु राशि में रवि हो तो जातक विवेकी, योगमार्गरत, बुद्धिमान्, धनी, आस्तिक, व्यवहार कुशल, दयालु, शान्त, लोकप्रिय एवं शीघ्र क्रोधित होने वाला होता है।

चन्द्र

चतुर्थभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सुखी, मानी, दानी, उदार, रोगरहित, राजद्वेषवर्जित, कृषक, विवाह के पश्चात् भाग्योदयी, जलजीवी एवं बुद्धिमान होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

बुध

चतुर्थभाव में बुध हो तो जातक पण्डित भाग्यवान् नीतिवान्, नीतिज्ञ, लेखक, विद्वान्, बन्धुप्रेमी, उदार, गतिप्रिय, आलसी , स्थूलदेही, वाहनसुखी एवं दानी होता है।

धनु राशि में बुध हो तो जातक विद्वान्, समाज में सम्मानित, गुणी, सुगठित शरीर, अविवेकी, अच्छा संगठनकर्त्ता, चतुर, ईमानदार, उदार, प्रसिद्ध, राजमान्य, लेखक, सम्पादक एवं वक्ता होता है।

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

गुरु

दशमभाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठत पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

मिथुन राशि में गुरु हो तो जातक योग्य वक्ता, सुगठित शरीर, लम्बाकद, उदार, विद्वान, कई भाषाओं का जानने वाला, अनायास धनप्राप्त करने वाला, लोकमान्य, लेखक एवं व्यवहार कुशल होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

द्वितीय भाव में शनि हो तो जातक कटुभाषी, साधुद्वेषी, मुखरोगी, और कुम्भ या तुला का शनि हो तो धनी, लाभवान् एवं कुटुम्ब तथा भ्रातृवियोगी होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

तुला राशि में राहु हो तो जातक अल्पायु, दाँतों के रोग, विरासत में धन पाने वाला एवं कार्य कुशल होता है।

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

मेष राशि में केतु हो तो जातक चंचल, बहुभाषी एवं सुखी होता है।

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

दशा विश्लेषण

महादशा :- केतु

(01/01/2014 - 20/09/2017)

केतु की महादशा 01/01/2014 को आरम्भ और 20/09/2017 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु अष्टम भाव में है जहाँ से उसकी दृष्टि द्वितीय भाव पर है। उसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रह थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध की दशा में आपको अप्रत्याशित धन, सभी प्रकार का लाभ, जीवन में परिवर्तन तथा मामूली स्वास्थ्य समस्या हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको मामूली स्वास्थ्य समस्या, अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ और हानि होगी।

स्वास्थ्य : इस दशा के दौरान आपको कुछ समस्या हो सकती है। केतु के कारण आपको संक्रामक बीमारी, आँख की पीड़ा, चर्मरोग, गठिया, जननांग से संबंधित बीमारी आदि हो सकती है। कुछ सावधानी बरत कर इनसे बचाव किया जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय : आपको कुछ अप्रत्याशित आय हो सकती है। आपको विरासती सम्पत्ति, बोनस, ग्रैच्यूइटी और सेवा–निवृत्ति से लाभ मिल सकता है। व्यापार–व्यवसाय में अच्छा लाभ हो सकता है। सट्टे और लेन–देन में साधारण लाभ होगा। जीविका और व्यवसाय के लिए इन्जीनियरिंग, कम्प्यूटर विज्ञान, वायु सैनिक के कार्य, दवा, बौद्धिक कार्य, अनुसन्धान–कार्य आदि का चयन कर सकते हैं। किताब, कम्प्यूटर, चमड़े के सामान, रत्न, समाचार पत्र, पत्रिका आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। सहकर्मी और अधीनस्थ कर्मचारी कठिनाइ उत्पन्न करेंगे। आपका मामूली परिवर्तन संभव है। व्यापार–व्यवसाय से जुड़े लोगों की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। व्यापार में विस्तार हो सकता है और आपके लक्ष्य की पूर्ति होगी।

वाहन, यात्रा जायदाद : शनि की अन्तर्दशा के दौरान आपको आराम मिलेगा। आपकी एक सुन्दर गाड ो होगी। सम्पत्ति का लेन–देन लाभदायक सिद्ध होगा। शनि की अन्तर्दशा में छोटी यात्रा और शुक्र की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा : आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप शोध कार्यों में अच्छा करेंगे। आपको अपन स्तर बनाये रखने तथा परीक्षा और प्रतियोगिताओं में सफलता पाने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। विज्ञान, भाषा, लेखन, मीडिया, लेखा कार्य आदि में आपकी रुचि होगी। आप बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार : परिवार के साथ आपका सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चे प्रतियोगिता, प्रतिस्पर्धा में अच्छा करेंगे और आपको उन पर गर्व होगा। आपके जीवनसाथी को यश, ख्याति और पहचान मिलेगी। आपके जीवन साथी के साथ आपका सम्बन्ध सन्तोषजनक रहेगा। आपकी माता की जमीन–जायदाद

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

में वृद्धि और समृद्धि तथा सफलता मिलेगी जबकि आपके पिता को सभी प्रकार का लाभ मिलेगा और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई–बहनों को सट्टे में लाभ होगा और शिक्षा उत्तम होगी जबकि बड़ों का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यात्रा और उच्च शिक्षा होगी। उनके साथ आपका संबंध मधुर रहेगा।

अन्तर्दशा : केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा, व्यवसाय में वृद्धि और वाणिज्य–व्यापार में लाभ होगा। शुक्र के कारण खर्च, लम्बी यात्रा और साझेदारों से लाभ मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में सम्मान की प्राप्ति और जीवन में प्रगति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में यात्रा, सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। मंगल के कारण स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और आय तथा समृद्धि अच्छी होगी। राहु कुछ बाधा उत्पन्न कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सम्पत्ति मिलेगी जबकि शनि के कारण कुद परिवर्तन, यात्रा और जमीन–जायदाद में वृद्धि होगी। बुध की अन्तर्दशा में लाभ, मामूली स्वास्थ्य समस्या और परिवर्तन होगा।

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

दशा विश्लेषण

अंर्तदशा :- केतु - मंगल

(01/01/2014)

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लक्ष्य प्राप्ति में सफल रहेंगे। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है मगर आप कूटनीति द्वारा बचाव कर सकते हैं। व्यापार द्वारा लाभ में वृद्धि होगी; व्यापार से संबंधित यात्राएं हो सकती हैं। शारीरिक क्षमता और ऊर्जा उत्तम होंगी। विरासत और जीवनसाथी के धन द्वारा लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपके जीवनसाथी का धनार्जन उत्तम होगा; व्यापार या साझेदारी में कुछ तनाव हो सकता है। आपके पिता को निवेश से लाभ होगा। माता सफल रहेंगी, उनकी तीर्थयात्रा हो सकती है, निवेश से लाभ होगा, उत्साह पर्याप्त रहेगा। आपके भाई–बहनों के लिए स्पर्धियों पर विजय, धन, उत्तम स्वास्थ्य, सफलता और प्रसिद्धि का संकेत है।

आपकी संतान अगर कार्यरत है तो प्रसिद्ध होगी, कार्यों में सफलता मिलेगी, पिता से लाभ होगा, यात्रा हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो अचानक लाभ हो सकता है; सहकर्मियों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को पहले की साख और निवेश से लाभ होगा। व्यापारियों की आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा, मगर अत्यधिक परिश्रम से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल मसूर, लाल वस्त्र और लाल चंदन का दान करें।

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

दशा विश्लेषण

अंर्तदशा :- केतु - राहु

(01/01/2014 - 08/09/2014)

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। सुख–साधन उपलब्ध होंगे। प्रभावशाली व्यक्तियों के संपर्क में आएंगे। वे आपके लिए लाभकारी रहेंगे। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। अचानक धनागम हो सकता है। कार्यक्षेत्र में अप्रत्याशित परिवर्तन द्वारा धन आ सकता है। विदेश से भी लाभ हो सकता है। विदेश यात्रा संभव है।

आपके जीवनसाथी को अचानक अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। पिता धनी बनेंगे, उनके सम्मान में वृद्धि होगी। माता धनी बनेंगी। आपके भाई–बहनों के लिए अधिक खर्च, कार्यों में असफलता, अचल संपत्ति की प्राप्ति, उत्तम शिक्षा, प्रसन्नता और माता से उत्तम संबंधों का संकेत है।

आपकी संतान प्रसिद्ध होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो परिश्रम करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को आर्थिक प्रगति के अवसर मिलेंगे। व्यापारियों के कार्य में परिवर्तन आ सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। दांतों की देखभाल करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड द, सतनजा और नीले वस्त्र दान करें।

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

दशा विश्लेषण

अंर्तदशा :- केतु - गुरु

(08/09/2014 - 15/08/2015)

इस अवधि में आप प्रसिद्ध होंगे। सफलता प्राप्त होगी। शिक्षा उत्तम होगी। सरकार से लाभ और सहायता प्राप्त होंगे। तीर्थयात्रा हो सकती है। सुख–साधन और वाहन उपलब्ध होंगे। माता से उत्तम संबंध होंगे। विविध माध्यमों से धनागम हो सकता है। शत्रुओं पर विजय होगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, माता पक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपके पिता की आय उत्तम होगी, वह सुख–साधन संपन्न होंगे, परिवारजनों से उत्तम संबंध होंगे। माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई–बहनों के लिए परिवर्तन का संकेत है।

आपकी संतान को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, मामापक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है, स्वास्थ्य उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली और धनी होंगे। परामर्शदाता प्रसिद्ध होंगे; आय अच्छी होगी। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीली वस्तुएं जैसे वस्त्र, फूल, दाल, शहद आदि दान करें।

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

दशा विश्लेषण

अंर्तदशा :- केतु - शनि

(15/08/2015 - 23/09/2016)

इस अवधि में आपकी आय बढ़ेगी, संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। जिंदगी आराम से कटेगी। जीवनसाथी या साझेदार के माध्यम से लाभ हो सकता है। तंत्र–मंत्र और गुप्त विद्या में रुचि हो सकती है। धनागम उत्तम होगा, धनी बन सकते हैं। भूमि और वाहन का सुख मिलेगा। प्रसिद्धि बढ़ेगी, धनागम होगा, सम्मान और पद में उन्नति होगी। इच्छाएं पूर्ण होंगी।

आपके जीवनसाथी के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है। आपके पिता को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी; उन्हें अधीनस्थ कर्मचारियों का सहयोग मिलेगा। माता का धनार्जन उत्तम होगा, निवेश से लाभ होगा। आपके भाई–बहनों के लिए कार्यों में बाधा, अचल संपत्ति की प्राप्ति, घर में स्थायित्व और धन का संकेत है। आपकी संतान सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त करेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी, किस्मत साथ देगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के कार्य में कुछ परिवर्तन आ सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मुख और दांतों की व्याधिओं से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ऊँ शं शनैचराय नमः

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र

(20/09/2017 - 20/09/2037)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 20/09/2017 को आरम्भ होकर 20/09/2037 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र पंचम भाव में स्थित है। यह दो राशियों वृष और तुला का स्वामी है। यह मीन में उच्च का जबकि कन्या में निम्न का होता है। शुक्र एक शुभ ग्रह है और भावानात्मक आनन्द, अच्छे स्वाद, आनन्द तथा सुखमय जीवन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। आपकी जन्म कुण्डली में पंचम भाव में स्थित होकर यह एकादश भाव को देख रहा है और इस पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् पंचम भाव संतान, आनंद, कला, आमोद–प्रमोद, मनोरंजन, जुआ या दाँव, प्रेम संबंध, धार्मिक बौद्धिकता, प्रशिक्षण और ज्ञान, प्रचुर धन आदि का द्योतक है।

स्वास्थ्य : महादशा स्वामी शुक्र पंचम भाव में स्थित होकर भाव को प्रबलित कर रहा है। इसके फलस्वरूप आपको इस दशाकाल में कोई छोटी या बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी।

अर्थ–संपत्ति : योगकारक ग्रह शुक्र के पंचम भाव अर्थात त्रिकोण में स्थित होने के फलस्वरूप आपको इसके दशा काल में उन्नति करने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे एवं आप चल तथा अचल संपत्ति में वृद्धि करेंगे। आप अपने भाग्य को सट्टे–जुए में आजमाने की कोशिश कर सकते हैं या लॉटरी जीत सकते हैं अथवा अचानक धन की प्राप्ति हो सकती है। आप विलासी जीवन व्यतीत करेंगे।

व्यवसाय : आप दलाली का व्यवसाय अपना सकते हैं या सट्टा और इससे मिला–जुलता व्यवसाय कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन : आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्रपर्ण और आनन्दमय रहेगा। आपके जीवन साथी हमेशा

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

दशा विश्लेषण

अंर्तदशा :- शुक्र - शुक्र

(20/09/2017 - 19/01/2021)

शुक्र आपकी जन्मपत्री में पंचम भाव में स्थित है। पंचम भाव संतान, मनोरंजन, सैर–सपाटे, प्रेम संबंध, स्पर्धा, अच्छे–बुरे चरित्र, धार्मिकता, विवेक, धनाढ्यता और आत्मिक उत्थान का परिचायक है। शुक्र विवाह, प्रेम और सुख–सुविधाओं का कारक है। पंचम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के 11वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।
इस अवधि में आपकी लोकप्रियता बढ़ेगी। आप रोमांटिक और शायरी के शौकीन बनेंगे। मित्र खूब होंगे। दिल और दिमाग मजबूत होने से धनागम उत्तम होगा। सट्टेबाजी या शेयरों से भी धन कमा सकते हैं। सरकार से पुरस्कार मिल सकता है।
शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें।

Future Point Future Point Future Point Future Point Future Point

मुख्य कार्यालय : एक्स-35, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज-2, नई दिल्ली-110020
शाखा : डी- 68, हौज खास, नई दिल्ली-110016
फोनः- 011-40541000, 40541020
Email: mail@futurepointindia.com